सऊदी अरब में राष्ट्रवाद का आगमन

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) से संबंधित है।

इंडियन एक्सप्रेस

लेखक-सी. राजा मोहन (निदेशक, इंस्टीट्यूट ऑफ साउथ एशियन स्टडीज, नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ सिंगापुर)

19 फरवरी, 2019

"प्रिंस सलमान के पैन-इस्लाम (एक राजनीतिक विचारधारा, जो एक इस्लामिक देश में मुसलमानों की एकता की वकालत करती है) को तवज्जो नहीं देना नई दिल्ली को रियाद के साथ रणनीतिक साझेदारी बनाने का अवसर प्रदान करता है।"

जब हम मध्य पूर्व में राष्ट्रवाद के बारे में सोचते हैं, तो हम 'अरब राष्ट्रवाद' को याद करते हैं, जो पिछले कई दशकों में इस क्षेत्र के साथ भारतीय जुड़ाव को दर्शाता है। जैसा कि दिल्ली इस सप्ताह सऊदी क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान की मेजबानी करने की तैयारी में लगा हुआ है, भारत को एक अपरिचित विचार अर्थात 'अरब में राष्ट्रवाद' के साथ सामने आना चाहिए।

राष्ट्रवाद को बढ़ावा देना और पैन-इस्लामवाद को तवज्जो नहीं देना, सऊदी अरब की आंतरिक और बाहरी नीतियों को पुनः पेश करने के क्राउन प्रिंस सलमान के प्रयास को दर्शाता है। साथ ही इनके साथ-साथ अन्य भी विशेष रूप से संयुक्त अरब अमीरात, मध्य पूर्व में अशांति से निपटने के लिए एक राष्ट्रीय पहचान बनाने की कोशिश कर रहे हैं।

गौरतलब है कि अरब प्रायद्वीप के राज्यों को औपनिवेशिक शासकों से अपनी 'राष्ट्रीय' स्वतंत्रता के लिए संघर्ष नहीं करना पड़ा है। न ही उन्हें एक स्पष्ट और निरंतर क्षेत्रीय इकाई विरासत में मिली है, जिस पर उन्होंने एक राष्ट्र का निर्माण किया हो। अरबी राजतंत्रों ने स्वाभाविक रूप से अपनी राजनीतिक वैधता के लिए आदिवासी और धार्मिक पहचान पर भरोसा करने का विकल्प चुना।

अरब-राजशाही ने भी पूर्व-राष्ट्रीय राजनीति (supra&national politics) पर क्षेत्रीय प्रवाह के साथ जाने का विकल्प चुना। आज, जैसा कि खाड़ी के राजशाही, जातीय और धार्मिक आंदोलनों के बढ़ते खतरे की समीक्षा करते हैं, तो वे पाते है कि राष्ट्रवाद की ओर ही रुख करना उनके लिए हितकर साबित होगा।

अरब प्रायद्वीप के शासक भी स्वीकार कर रहे हैं कि उनके समाजों से बाहर सुसंगत समुदायों का निर्माण विभिन्न धर्मों और संप्रदायों के प्रवासियों के साथ साझा धर्म, संप्रदाय, जनजाति या जातीयता से अधिक की आवश्यकता को दर्शाता है और इन्हीं सब विचारधाराओं से पता लगता है कि 'अरब में राष्ट्रवाद' का आगमन हो चुका है। हालांकि, यह 'अरब राष्ट्रवाद' से बहुत अलग है, जिसे राष्ट्रीय सीमाओं से आगे बढ़ना था। अरब में राष्ट्रवाद अलग संप्रभु राज्यों के हितों को परिभाषित करने से संबंधित है। अतीत में, अरब राष्ट्रवाद को विशेष रूप से भारत में, एक प्रगतिशील शक्ति के रूप में रूढ़िवादी धार्मिक आवेगों का मुकाबला करते हुए देखा गया था। आज 'अरब में राष्ट्रवाद' अरब एकता और इस्लामी एकजुटता के मलबे से बाहर निकल गया है।

नव-स्वतंत्र भारत के लिए, 'अरब राष्ट्रवाद' एक विशेष अपील थी। यह साम्राज्यवाद विरोधी विचारों के साथ-साथ समाजवाद और गुटनिरपेक्षता के नारों से गूंजता रहा है। इस क्षेत्र में जो मुद्दे हावी थे अर्थात् अरब और इजराइल के बीच संघर्ष, राष्ट्रवाद के लिए फिलिस्तीनी संघर्ष और अरबों द्वारा संयुक्त पहल ने क्षेत्र की राजनीति को मजबूत करने के भारत के निर्णय को प्रबल किया है।

1967 में इजराइल के साथ युद्ध में अरबों को मिली करारी हार के बाद अरब राष्ट्रवाद बैकफुट पर चला गया था, जिसके बाद सऊदी ने 1969 में ऑर्गेनाइजेशन ऑफ इस्लामिक कॉन्फ्रेंस शुरू करने का बीड़ा उठाया।

मध्य पूर्व में प्रमुख बहस के रूप में राजनीतिक इस्लाम के उद्भव के साथ,पाकिस्तान के साथ भारत के विवादों में ओआईसी की दखल ने दिल्ली को चिंता में डाल दिया है। सांस्कृतिक दृष्टि से, भारतीय विदेश नीति के अभिजात वर्ग और राजनीतिक वर्ग अपने सफेद रंग के थैबों (एक तरह का परिधान) या काले रंग में ईरानी मुल्लाओं के बजाय सूट में पैन-अरब बाथिस्टों के साथ अधिक सहज थे।

उस सऊदी अरब को तुर्की और ईरान के राजनीतिक इस्लाम के खिलाफ रखा गया है और मुस्लिम ब्रदरहुड जैसे समूहों का सामना कर रहा है, जो क्षेत्र की राजनीति में चल रहे संरचनात्मक बदलाव के बारे में कुछ कहता है। द हाउस ऑफ सऊद, जिसने 1970 के दशक के उत्तरार्ध से धर्म को अपनी घरेलू राजनीति और विदेश नीति में एक बड़ी भूमिका निभाने दी, 9/11 के हमलों के बाद अस्तित्ववादी खतरों के लिए जागृत हो उठा।

सऊदी अरब में राष्ट्रवाद को मजबूत करने का प्रयास किंग अब्दुल्ला के तहत लंबे वर्षों तक क्राउन प्रिंस के रूप में शुरू हुआ। वार्षिक जनाद्रियाह त्योहार, जिसे उन्होंने शुरू किया, अरब प्रायद्वीप की विरासत और संस्कृति का जश्न मनाता है। 2005 में, उन्होंने सऊदी राष्ट्रीय दिवस (23 सितंबर) को राष्ट्रीय अवकाश घोषित किया। यह राज्य में एकमात्र गैर-धार्मिक अवकाश है।

क्राउन प्रिंस सलमान इस एजेंडे को आगे बढ़ा रहे हैं। 'सऊदी' होना धीरे-धीरे, लेकिन निश्चित रूप से, 'मुस्लिम' या 'अरब' होने जितना महत्वपूर्ण है। शब्द ष्देशद्रोहीष् तेजी से राज्य के दुश्मनों का वर्णन करने के लिए ष्काफिरष् की जगह पर पसंद किया जा रहा है। खेल, विशेष रूप से फुटबॉल, ने सऊदी के बीच एक नया धर्मनिरपेक्ष बंधन बनाना शुरू कर दिया है। यमन में गृहयुद्ध में भाग लेने वाले सऊदी सशस्त्र बलों के पीछे लोकप्रिय भावना को जुटाने के लिए 'देशभक्ति' भी आलंकारिक भाषा बन गई है।

प्रिंस सलमान का राष्ट्रवाद प्रतीकों और शब्दावली के बारे में नहीं है। जिस देश में गैर-सुन्नी इस्लामी संप्रदायों और गैर-मुस्लिम धर्मों के लिए धर्म की स्वतंत्रता नहीं जानी जाती है, वह कुछ प्रयोगात्मक कदम उठा रहा है। राज्य के पूर्वी हिस्से में लंबे समय से उदास शिया अल्पसंख्यकों तक पहुँच को मजबूत करने का एक सचेत प्रयास किया जा रहा है। इस बात की अटकलें लगाई जा रही हैं कि रियाद की पहली शिया मस्जिद का निर्माण किया जाएगा और शायद यह जल्द ही संभव हो जाएगा।

ये दुनिया के सबसे रूढ़िवादी समाजों का एक छोटा सा कदम हैं। सलमान का राष्ट्रवाद भी, बिना किसी सवाल के, एक शीर्ष पहल है। निश्चित रूप से इसे कई समस्याओं का सामना करना पड़ेगा, लेकिन इस तथ्य को भी नकारा नहीं जा सकता है कि राज्य अपने यहाँ एक दीर्घकालिक बदलाव वाले प्रयोग कर रहा है। विदेश नीति को पुनर्जीवित करना सलमान के लिए बहुत आसान रहा है, जो अब "सऊदी अरब फर्स्ट" की बात करते हैं। जैसे-जैसे रियाद की विदेश नीति के संचालन में धर्म का महत्व कम होने लगेगा, भारत को प्रिंस सलमान और 'अरब में राष्ट्रवाद' के अन्य समर्थकों के बीच घनिष्ठ रणनीतिक साझेदारी से बहुत लाभ होगा।

भारत और सऊदी अरब संबंध

चर्चा में क्यों?

- सऊदी अरब के प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान दो दिनों की भारत यात्रा पर हैं, जिस दौरान भारत, पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद का मुद्दा उठाएगा।
- साथ ही दोनों देश रक्षा संबंधों में बढ़ोत्तरी पर भी चर्चा करेंगे, जिसमें संयुक्त नौसेना अभ्यास शामिल है।
- इस यात्रा के दौरान भारत और सऊदी अरब के बीच 5 एमओयू पर हस्ताक्षर किए जाएंगे।
- इस यात्रा में व्यापार व निवेश के अलावा द्विपक्षीय रणनीतिक संबंधों की मजबूती पर विशेष फोकस किया जाएगा।

मुख्य बिंदु

- विदेश मंत्रालय के सूत्र बताते हैं प्रिंस सलमान की भारत यात्रा बहुत महत्वपूर्ण है और भारत अपने सहयोगी देश सऊदी अरब का आठवां रणनीतिक साझेदार देश बनने जा रहा है।
- सऊदी अरब और भारत के बीच में 27.48 अरब अमेरिकी डॉलर का द्विपक्षीय व्यापार है।
- 2016-17 की तुलना में पिछले साल इसमें दस प्रतिशत की वृद्धि हुई है।
- सऊदी अरब भारत का चौथा सबसे बड़ा आर्थिक साझेदार देश है।
- अभी भारत अपनी जरुरत का 17 फीसद तेल और 32 फीसद गैस सऊदी अरब से खरीदता है।
- दोनों देश खाद्य सुरक्षा, आधारभूत ढांचा, नवीकरणीय ऊर्जा, उर्वरक जैसे क्षेत्रों में संयुक्त गठजोड़ बढ़ाने को इच्छुक हैं।

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

1. सऊदी अरब भारत का चौथा बड़ा आर्थिक साझेदार देश है।
2. सऊदी अरब भारत का सबसे बड़ा तेल निर्यातक देश है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1 और न ही 2

1. Consider the following statements-

1. Saudi Arabia is India's fourth largest economic partner country.
2. Saudi Arabia is the leading exporter of oil to India.

Which of the above statements is/are correct?

(a) Only 1
(b) Only 2
(c) Both 1 and 2
(d) Neither 1 nor 2

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्रश्न: सऊदी अरब द्वारा एक वैश्विक इस्लामी विचारधारा को दरकिनार कर 'राष्ट्रवाद' पर बल दिया जाना भारत के लिए किस प्रकार हितकर होगा? चर्चा कीजिए।

Q. How does stress on " Nationalism" by passing the global islamic ideology by Saudi Arab will be beneficial for India? Discuss.

(250 Words)

नोट : 18 फरवरी को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1(c) होगा।